



PROF. JOGENDRA NATH PHUKAN

Prof. Jogendra Nath Phukan is a recognized academician in the field of Tai studies across Southeast Asia. He is deeply involved in the study of history and culture of Assam, and of the Tai Ahom people in particular. He is the founder president of the P.K. Buragohain Institute of Tai & Southeast Asian Studies at Guwahati.

2. Born on 1st March, 1933 Prof. Phukan received his Bachelor of Arts degree with Distinction from the Gauhati University in 1956. He had the Master of Arts degree in History from the Saugar University in 1959. He joined the Department of History in Gauhati University in 1960. For his research on Economic History of Assam Under the Ahom he was awarded the Ph.D. degree of the Gauhati University. He became Professor & Head in the History Department. He retired in 1993. After retirement, he served for two years as the H. K. Barpujari Professor of History in the Gauhati University. From 1995 to 2001 he was Visiting Professor in the Nagaland University, Kohima. He served as the First Honorary Director of North East Centre of Indian Council of Historical Research. He worked as North East Coordinator of the Maulana Abul Kalam Azad Institute of Asian Studies. Under his guidance twenty-six scholars received Ph. D. Degree of Gauhati and Nagaland Universities.

3. Prof. Phukan was President of the North East India History Association, the prime association of historians in the North East. He was President of the Kamarupa Anusandhana Samiti (Assam Research Society), the oldest academic body founded in 1912. He was a member of the Indian Records Commission and of the Indian Council of Historical Research. His research works are published in the Journals of Numismatic Society of India, Linguistic Society of India, Assam Research Society, International Conference on Thai Studies, International Review of Tai Cultural Studies in Berlin, Journal of Tai Studies in Myanmar, Tai Heritage. Some of his papers are translated into Thai and Mandarin.

4. Prof Phukan has been associated with social bodies. He was the Secretary of the Tai Historical and Cultural Society of Assam, and President of the Eastern Tai Literary Association, the largest literary body of the Tai people of Assam. He was the Chairman of the Tai Ahom Development Council of the Government of Assam. He was Chairman of the Border Committee of the Assam Government on border issues with Nagaland and Arunachal Pradesh. He was a member of Other Backward Classes Commission of the Assam Government. He delivered the Keynote Address in the 1st China Ruili Mong Mao Long International Symposium on Dai/Tai Traditional Culture held in Ruili, Dehong, Yunnan on 17.12. 2015. He was invited by the Centre of Bhutan Study and delivered a lecture on Assam-Bhutan Relations at Thimpu in 2016. Prof. Phukan delivered the Keynote Address at the International Conference on Northeast India and Myanmar: Ethnic and Cultural Linkage organized by the Indira Gandhi Centre for Arts, New Delhi at the Manipur University in 2016.

5. Prof. Phukan has contributed greatly to the history, language and culture of Assam particularly associated with the Ahom who ruled for six hundred years till the coming of the British in 1826. Prof Phukan is versed in Tai Ahom, an old form of Tai dialect, in which numerous literary works, coins and inscriptions are found. He did cataloguing of Tai manuscripts, and worked on coins and inscriptions. For the first time, Prof. Phukan has identified and traced the details of the route followed by the Tai Ahom in the early thirteenth century from south-western Yunnan to the eastern Brahmaputra valley. He has prepared a documentary map of the route now in several museums in Assam. He has initiated a new orientation of study of history and culture of Assam with those of south western Yunnan. This is a new area of academic study between two regions of India and China.

6. Prof. Phukan is a recipient of the "Siukapha Award" of the Government of Assam in 2008.





प्रो. योगेंद्र नाथ फुकन

प्रो. योगेंद्र नाथ फुकन पूरे दक्षिण–पूर्व एशिया में ताई अध्ययन के एक प्रख्यात शिक्षाविद हैं। वह असम के इतिहास और संस्कृति और विशेष रूप से ताई अहोम लोगों के इतिहास एवं संस्कृति के अध्ययन में गहराई से जुड़े हुए हैं। वह गुवाहाटी में पी.के. बुरगोहेन ताई और दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष हैं।

2. प्रो. फुकन जन्म 1 मार्च, 1933 को हुआ था। उन्होंने वर्ष, 1956 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय से बी.ए. की उपाधि विशेष योग्यता के साथ प्राप्त की। उन्होंने वर्ष, 1959 में सागर विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. की उपाधि हासिल की थी। उन्होंने वर्ष,1960 में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में कार्यभार ग्रहण किया। अहोम के तहत असम के आर्थिक इतिहास पर किए गए शोध के लिए उन्हें गुवाहाटी विश्वविद्यालय की पीएच.डी की उपाधि से सम्मानित किया गया। वह इतिहास विभाग में प्रोफेसर और प्रमुख बने। वह वर्ष,1993 में सेवानिवृत्त हो गए। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने दो साल तक गुवाहाटी विश्वविद्यालय में इतिहास के एच. के. बार पुजारी प्रोफेसर के रूप अपनी सेवाए दीं। वर्ष,1995 से 2001 तक वह नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा में अतिथि प्रोफेसर रहे। उन्होंने नॉर्थ ईस्ट सेंटर ऑफ इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च के प्रथम मानद निदेशक के रूप में सेवाएं दीं। उन्होंने मौलाना अबुल कलाम आजाद एशियाई अध्ययन संस्थान संस्थान के पूर्वोत्तर समन्वयक के रूप में कार्य किया। उनके मार्गदर्शन में छब्बीस विद्यार्थियों ने गुवाहाटी और नागालैंड विश्वविद्यालयों की पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की।

3. प्रो. फुकन नॉर्थ ईस्ट इंडिया हिस्ट्री एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे, जो कि पूर्वोत्तर के इतिहासकारों की प्रमुख एसोसिएशन है। वह कामरूप अनुसंधान समिति (असम रिसर्च सोसायटी) के अध्यक्ष रहे, जिसकी स्थापना सन 1912 में हुई थी और यह सबसे पुरानी शैक्षिक संस्था है। वह इंडियन रिकॉर्डस कमीशन और द इंडियन काउंसलिंग ऑफ हिस्टोरिकल रिसर्च के सदस्य रहे। उनके शोध कार्य न्यूमिस्मेटिक सोसायटी ऑफ इंडिया, लिंग्विस्टिक सोसायटी ऑफ इंडिया, असम रिसर्च सोसायटी, इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन ताई स्टडीज, बर्लिन स्थित इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ ताई कल्चरल स्टडीज, म्यांमार स्थित जर्नल ऑफ ताई स्टडीज, ताई हेरिटेज जर्नल में प्रकाशित हुए। उनके कुछ एक शोधपत्रों का अनुवाद ताई और मंदारिन भाषा में किया गया है।

4 प्रो. फुकन सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। वह ताईहिस्टोरिकल एवं कल्चरल सोसायटी ऑफ असम के सचिव, ईस्टर्न ताई लिटरेरी एसोसिएशन के अध्यक्ष रहे जो कि असम के ताई लोगों की सबसे बड़ी साहित्यिक संस्था है। वह असम सरकार की ताई अहोम विकास परिषद के अध्यक्ष रहे। वह, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश के सीमा संबंधी मुद्दों से जुड़ी असम सरकार की बार्डर कमेटी के अध्यक्ष रहे। वह असम सरकार के अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य रहे। उन्होंने 17.12.2015 को रुइली, देहांग, यूनान में आयोजित दाई/ताई पारंपरिक संस्कृति पर आयोजित प्रथम चाइना रुइली मोंग माओ लांग इंटरनेशनल विचारगोष्ठी में मुख्य भाषण दिया। उन्हें वर्ष, 2016 में, भूटान अध्ययन केंद्र द्वारा आमंत्रित किया गया था, जहां उन्होंने थिम्पू में असम–भूटान संबंधों पर व्याख्यान दिया था। उन्होंने वर्ष, 2016 में, मणिपुर विश्वविद्यालय में इंदिरा गांधी कला केंद्र, नई दिल्ली द्वारा 'पूर्वोत्तर भारत तथा म्यांमारः मानवजातीय एवं सांस्कृतिक संयोजन' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में मुख्य भाषण दिया था।

5 प्रो. फुकन ने असम और विशेषकर अहोम से संबद्ध इतिहास, भाषा और संस्कृति में अत्यधिक योगदान दिया है। अहोम ने सन् 1826 में अंग्रेजों के आने तक छह सौ साल तक शासन किया था। प्रो. फुकन को ताई बोली के प्राचीन रूप ताई अहोम का विशद ज्ञान है। इस बोली में अनगिनत साहित्यिक कार्य, सिक्के और शिलालेख पाए जाते हैं। उन्होंने ताई पांडुलिपियों को सूचीबद्ध किया और सिक्कों और शिलालेखों पर कार्य किया। प्रो. फुकन ने पहली बार, तेरहवीं शताब्दी की शुरुआत में ताई अहोम द्वारा दक्षिण–पश्चिम यूनान से पूर्वी ब्रह्मपुत्र घाटी में आने के लिए अपनाए गए मार्ग की पहचान की है और उसका पता लगाया है। उन्होंने इस मार्ग का एक दस्तावजी मानचित्र तैयार किया है, जो अब असम के कई संग्रहालयों में मौजूद है। उन्होंने दक्षिण–पश्चिम यूनान से संबंधित असम के इतिहास और संस्कृति के अध्ययन की एक नई किस्म की प्रवृत्ति शुरू की है। यह भारत और चीन के दो क्षेत्रों के बीच शैक्षिक अध्ययन का एक नूतन क्षेत्र है।

6. प्रो. फुकन को वर्ष 2008 में असम सरकार का 'सियुकाफा पुरस्कार' प्राप्त हुआ है।